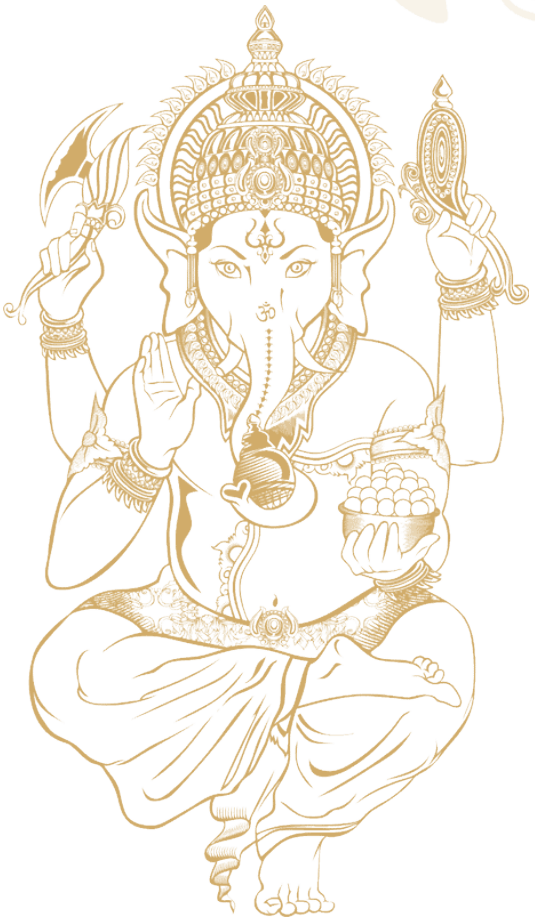

Rajat

Himanshi

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121760902

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
13/04/1998	जन्म तिथि	09/05/2000
सोमवार	दिन	मंगलवार
घंटे 20:35:00	जन्म समय	12:05:00 घंटे
घटी 36:34:20	जन्म समय(घटी)	16:19:34 घटी
India	देश	India
Dadri	स्थान	Delhi
28:33:00 उत्तर	अक्षांश	28:39:00 उत्तर
77:33:00 पूर्व	रेखांश	77:13:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:19:48	स्थानिक संस्कार	-00:21:08 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
05:57:16	सूर्योदय	05:34:20
18:44:05	सूर्यास्त	19:01:14
23:49:51	चित्रपक्षीय अयनांश	23:51:27

विंशोत्तरी	अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी
राहु 2वर्ष 5मा 14दि	24:18:46	तुला	लग्न	कर्क	25:29:57	शनि 17वर्ष 0मा 20दि
शनि	29:39:15	मीन	सूर्य	मेष	25:05:07	बुध
26/09/2016	18:10:50	तुला	चंद्र	कर्क	04:41:54	29/05/2017
27/09/2035	06:36:18	मेष	मंगल	वृष	09:58:22	30/05/2034
शनि 30/09/2019	17:51:17	मीन व	बुध	मेष	25:13:26	बुध 26/10/2019
बुध 09/06/2022	22:08:52	कुंभ	गुरु	मेष	24:16:54	केतु 22/10/2020
केतु 19/07/2023	13:58:05	कुंभ	शुक्र	मेष	16:10:56	शुक्र 23/08/2023
शुक्र 18/09/2026	29:31:59	मीन	शनि	मेष	26:22:57	सूर्य 29/06/2024
सूर्य 31/08/2027	15:54:35	सिंह व	राहु	कर्क	03:12:47	चन्द्र 28/11/2025
चन्द्र 31/03/2029	15:54:35	कुंभ व	केतु	मक	03:12:47	मंगल 25/11/2026
मंगल 10/05/2030	18:26:26	मक	हर्ष	मक	26:51:41	राहु 14/06/2029
राहु 16/03/2033	08:12:46	मक	नेप व	मक	12:42:56	गुरु 19/09/2031
गुरु 27/09/2035	13:55:47	वृश्चि व	प्लूटो व	वृश्चि	18:17:48	शनि 30/05/2034

लग्न-चलित

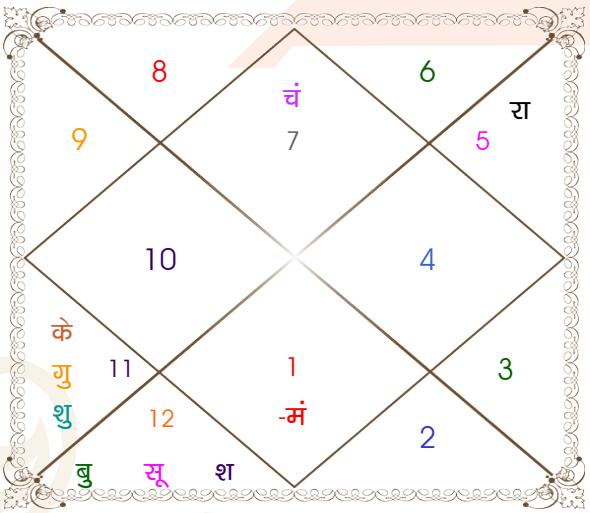

लग्न-चलित

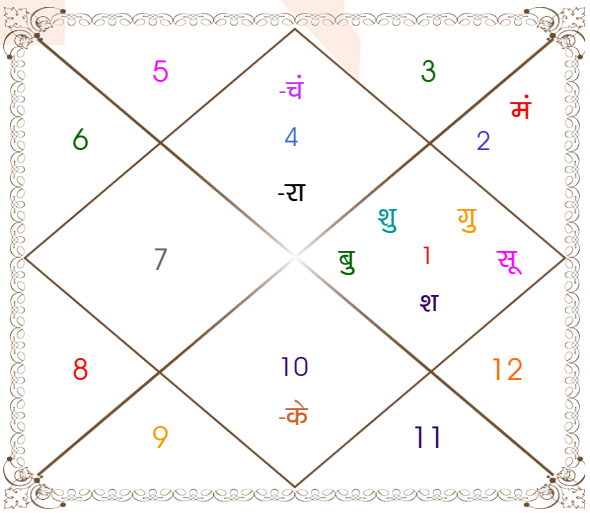

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	शूद्र	विप्र	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	जलचर	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	मित्र	विपत	3	1.50	--	भाग्य
योनि	महिष	मेष	4	3.00	--	यौन विचार
मैत्री	शुक्र	चन्द्र	5	0.50	--	आपसी सम्बन्ध
गण	देव	देव	6	6.00	--	सामाजिकता
भकूट	तुला	कर्क	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	अन्त्य	मध्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	27.00		

Rajat का वर्ग सर्प है तथा भ्पउंदीप का वर्ग मेष है। इन दोनों वर्गों में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार Rajat और भ्पउंदीप का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

Rajat मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में सप्तम् भाव में स्थित है।

चतुः सप्तमे भौमो मेषकर्कटे निग्रहः।
कुजदोषो न विद्यते।।

अर्थात् चतुर्थ तथा सप्तम भाव में यदि मेष या कर्क का मंगल हो तो कुजदोष समाप्त हो जाता है। क्योंकि मंगल Rajat कि कुण्डली में सप्तम् भाव में मेष राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

भ्पउंदीप मंगलीक नही है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है।

गुणबाहुल्ये भौमदोषो न विद्यते।।

यदि अधिक गुण मिलते हों तो मंगल दोष नहीं लगता।

क्योंकि अधिक गुण मिलते हैं अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल भ्पउंदीप कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष

कट जाता है।

Rajat तथा भ्पउंदीप में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।